*** प्रमुख मुहावरे और उनका अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग** [12]

1. हाथ पसारना -

उत्तर : अर्थ – किसी से कुछ माँगना, याचना करना
पाठ में प्रयोग – "मगर किसी के आगे जाकर हाथ नहीं पसारना है।"
वाक्य प्रयोग – स्वाभिमानी व्यक्ति कभी किसी के आगे हाथ नहीं पसारता।

2. आकंठ डूबना -

उत्तर : अर्थ – किसी काम में पूरी तरह लीन हो जाना
पाठ में प्रयोग – "संगीत में आकंठ डूबे हुए आपके महान जीवन की..."
वाक्य प्रयोग – वह पढ़ाई में आकंठ डूबा रहता है।

3. सुध न रहना -

उत्तर : अर्थ – होश न रहना, ध्यान न रहना
पाठ में प्रयोग – "मुझे अपने गाने और रिकॉर्डिंग के अलावा किसी दूसरी चीज की सुध नहीं रहती थी।"
वाक्य प्रयोग – खेल में इतना मगन था कि समय की सुध न रही।

4. आगे झुकना -

उत्तर : अर्थ – किसी के सामने समर्पण करना, दबाव में आना
पाठ में प्रयोग – "किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।"
वाक्य प्रयोग – सच्चाई के लिए लड़ने वाला कभी गलत के आगे नहीं झुकता।

5. नाम आगे बढ़ाना -

उत्तर : अर्थ – परिवार या गुरु की कीर्ति को और ऊँचा करना
पाठ में प्रयोग – "मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।"
वाक्य प्रयोग – हर बेटे का सपना होता है कि वह अपने परिवार का नाम आगे बढ़ाए।

6. मुँह मीठा करना -

उत्तर : अर्थ – मिठाई खिलाकर खुशी मनाना
पाठ में प्रयोग – "पहले बैठो, चाय पियो और मुँह मीठा करो, फिर जाने देंगे।"
वाक्य प्रयोग – परीक्षा में प्रथम आने पर माँ ने सबका मुँह मीठा कराया।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए।** [7]

7. लता जी ने अपने पिताजी से क्या-क्या सीखा?

(A) अनुशासन और नियम के साथ जीना (B) भय और संशय के साथ जीना
(C) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना (D) चतुराई और संयम के साथ जीना

उत्तर : (ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना
इस साक्षात्कार में लता मंगेशकर ने स्पष्ट रूप से बताया है कि उन्होंने अपने पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर से स्वाभिमान और सही बात पर डटे रहने की सीख प्राप्त की।
उन्होंने कहा कि:

- उन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

- हर परिस्थिति में आत्मसम्मान के साथ जीना सीखा
- अगर कोई बात सही लगे, तो उस पर डटे रहना चाहिए

ये बातें सीधे-सीधे स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीने को दर्शाती हैं।

8. पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार सँभालने का लता जी का निर्णय किस जीवन-मूल्य का द्योतक है?

(A) संघर्ष (B) निराशा (C) भौतिकता (D) कर्तव्यनिष्ठा

उत्तर : (घ) कर्तव्यनिष्ठा

- लता मंगेशकर ने बताया कि पिताजी के निधन के बाद उन्होंने पूरे परिवार की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।
- उन्होंने लगातार मेहनत की, दिन-रात रिकॉर्डिंग की और यही सोचती रहीं कि परिवार की जरूरतें कैसे पूरी करें।

यह व्यवहार दिखाता है कि उन्होंने अपने कर्तव्य को सबसे पहले रखा और पूरी निष्ठा से उसे निभाया।

9. "बिल्कुल ठेठ गाँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है..." 'मंगलागौर' के वर्णन से भारतीय समाज की कौन-सी परंपरा उजागर होती है?

(A) संगीत पर आधुनिकता का प्रभाव (B) लोकगीतों की लोकप्रियता में कमी

(C) धार्मिक कार्यक्रमों में संगीत का महत्व (D) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका

उत्तर : (घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका

पाठ में लता मंगेशकर ने "मंगलागौर" का वर्णन करते हुए बताया है कि इस अवसर पर:

- स्त्रियाँ इकट्ठा होती हैं
- मिलकर गीत गाती हैं और नृत्य करती हैं
- पूरा उत्सव सामूहिक और सामाजिक रूप में मनाया जाता है

इससे स्पष्ट होता है कि संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह लोगों के बीच संबंध, खुशी और सामूहिकता को बढ़ाता है।

10. "गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन" – इस कहावत का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

(A) नाव गाँव में नहीं रहती, नदी में बहती है।

(B) इस नश्वर संसार में सब कुछ नष्ट हो जाता है।

(C) फिल्मों में गीत गाने से बहुत प्रसिद्धि मिलती है।

(D) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

उत्तर : (घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

लता मंगेशकर ने इस कहावत का अर्थ समझाते हुए कहा कि

"गाँव तो बह जाता है, लेकिन नाम रह जाता है।"

इसका प्रतीकात्मक अर्थ है:

- मनुष्य का शरीर (जीवन) नश्वर है
- लेकिन उसके कर्म, काम और नाम हमेशा जीवित रहते हैं

यही कारण है कि महान लोगों को उनके कार्यों के कारण लंबे समय तक याद किया जाता है।

11. कोरस में साथ गाने वाली लड़कियों के साथ लता जी के संबंध कैसे थे?

(A) औपचारिक (B) कामकाजी (C) आत्मीय (D) प्रतिस्पर्धात्मक

उत्तर : (ग) आत्मीय

लता मंगेशकर ने बताया कि कोरस में गाने वाली लड़कियों के साथ उनके संबंध:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

- बहुत अच्छे और घरेलू जैसे थे
- उनका घर में आना-जाना होता था
- वे उनके साथ बैठकर बातें करती थीं
- उन्हें अपने परिवार जैसा मानती थीं

यह सब दर्शाता है कि उनके संबंध केवल काम तक सीमित नहीं थे, बल्कि भावनात्मक और आत्मीय थे।

12. लता मंगेशकर के अनुसार बाबा हरिदास और तानसेन की कथाओं से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(A) संगीत द्वारा दीपक जलाए जा सकते हैं। (B) मेघराग गाने से वर्षा होने लगती है।

(C) सुर में वाद्य बजाने से तार टूट जाते हैं। (D) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है।

उत्तर : (घ) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है।
लता मंगेशकर ने बाबा हरिदास और तानसेन से जुड़ी कथाओं के बारे में कहा कि
हो सकता है उनमें कुछ सच्चाई हो, लेकिन निश्चित रूप से यह कहना कठिन है।
फिर भी उन्होंने यह स्पष्ट माना कि:

- संगीत में असीम (अपरिमित) शक्ति होती है
- वह कुछ अप्रत्याशित प्रभाव उत्पन्न कर सकता है

उन्होंने उस्ताद अली अकबर ख़ाँ के उदाहरण से भी बताया कि गहरे सुर में डूबने पर वाद्य का तार भी टूट सकता है —जो संगीत की शक्ति को दर्शाता है।

13. पूरे साक्षात्कार में लता मंगेशकर की जो छवि बनती है, वह मुख्यतः कैसी है?

(A) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की (B) प्रसिद्धि, परिवार को समर्पित और आत्ममुग्ध

(C) कठोर सिद्धांतवादी और व्यावहारिक व्यक्ति (D) आधुनिकता विरोधी रूढ़िवादी विचारों वाली

उत्तर : (क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की
पूरे साक्षात्कार में लता मंगेशकर की जो छवि उभरती है, उसमें-

- **सादगी**: साधारण जीवन, सरल स्वभाव और विनम्रता
- **समर्पण**: संगीत और परिवार के प्रति पूर्ण निष्ठा
- **आत्मसम्मान**: किसी के आगे हाथ न फैलाना, अपने सिद्धांतों पर टिके रहना

ये तीनों गुण बार-बार उनके उत्तरों में दिखाई देते हैं।

14. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:** **[6]**

I. "मुझे अपने गाने और रेकॉर्डिंग के अलावा किसी दूसरी चीज की सुध नहीं रहती थी।"

उत्तर : एकाग्रता, समर्पण, साधना
तर्क: इस पंक्ति से स्पष्ट है कि लता मंगेशकर पूरी तरह अपने संगीत में डूबी रहती थीं। उनका ध्यान केवल अपने काम पर था, जो उनकी गहरी लगन और निरंतर अभ्यास (साधना) को दर्शाता है।

II. "आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है।"

उत्तर : विनम्रता, कृतज्ञता
तर्क: यहाँ वे अपनी प्रसिद्धि का श्रेय स्वयं को नहीं, बल्कि लोगों के प्रेम को देती हैं। यह उनकी विनम्रता और प्रशंसकों के प्रति आभार भावना को दर्शाता है।

III. "मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं।"

उत्तर : दार्शनिकता, स्पष्टवादिता
तर्क: इस कथन में जीवन की सच्चाई को स्वीकार करने की भावना है। वे स्पष्ट रूप से कहती हैं कि शरीर नश्वर है,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

लेकिन कला अमर रहती है—यह उनके दार्शनिक दृष्टिकोण को दिखाता है।

*** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।** **[39]**

15. "पिताजी उस समय पूछते थे, 'समझ गए न?'... इसके बाद वे कहते थे कि 'अच्छा अब जाओ। बाहर जाकर खेलो।'" यह प्रसंग पारिवारिक अनुशासन और स्नेह के संतुलन का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर : यह प्रसंग पारिवारिक अनुशासन और स्नेह के सुंदर संतुलन को दर्शाता है। लता मंगेशकर बताती हैं कि उनके पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर बच्चों को डाँटते नहीं थे, बल्कि केवल गंभीर नजर से देखते थे और पूछते थे—"समझ गए न?" इससे बच्चों में गलती का एहसास स्वयं जागता था। यहाँ अनुशासन डर पर नहीं, बल्कि सम्मान पर आधारित था। बच्चों को यह महसूस होता था कि उन्होंने कुछ गलत किया है और उन्हें सुधारना चाहिए। साथ ही, "अब जाओ, बाहर खेलो" कहकर वे स्नेह भी जताते थे, जिससे बच्चों पर मानसिक दबाव नहीं बनता था। इस प्रकार, यह प्रसंग दिखाता है कि सही अनुशासन वही है जिसमें कठोरता के बजाय समझ, विश्वास और प्रेम का समावेश हो।

16. लता मंगेशकर पर अपने पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर के व्यक्तित्व का क्या प्रभाव पड़ा? उनके कौन-कौन से कार्यों और व्यवहार में उनके पिता का प्रभाव दिखाई देता है?

उत्तर : लता मंगेशकर पर उनके पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने उनसे स्वाभिमान, अनुशासन और सही बात पर डटे रहने की सीख ली। यही कारण है कि लता जी ने जीवन में कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया और हर परिस्थिति में आत्मसम्मान बनाए रखा।
उनके व्यवहार में यह प्रभाव स्पष्ट दिखता है— वे अपने काम के प्रति अत्यंत समर्पित रहीं, कठिन परिस्थितियों में भी परिवार की जिम्मेदारी निभाई और लगातार मेहनत करती रहीं। उन्होंने पिताजी की तरह संगीत को ही अपना जीवन बना लिया और पूरी ईमानदारी से उसे निभाया। उनके सरल स्वभाव, सादगीपूर्ण जीवन और सिद्धांतों पर अडिग रहने की प्रवृत्ति भी उनके पिता के संस्कारों का ही परिणाम है।

17. "मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।" 'नाम आगे बढ़ाने' का लता जी के लिए क्या अर्थ है? क्या यह सिर्फ प्रसिद्धि पाना है या इससे कोई महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व भी जुड़ा हुआ है?

उत्तर : लता मंगेशकर के लिए "नाम आगे बढ़ाने" का अर्थ केवल प्रसिद्धि पाना नहीं है, बल्कि अपने पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर के आदर्शों और मूल्यों को आगे बढ़ाना है। उन्होंने अपने जीवन में ईमानदारी, समर्पण और स्वाभिमान को अपनाकर अपने पिता के नाम को सम्मान दिलाया।
लता जी के अनुसार, नाम आगे बढ़ाना एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। इसमें अपने काम को पूरी निष्ठा से करना, परिवार और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना और ऐसे कार्य करना शामिल है, जिससे लोगों के मन में सम्मान बना रहे। उन्होंने अपने संगीत और व्यवहार से यह साबित किया कि असली पहचान केवल प्रसिद्धि से नहीं, बल्कि अच्छे कर्मों और मूल्यों से बनती है। इस तरह, "नाम आगे बढ़ाना" उनके लिए एक नैतिक कर्तव्य और आदर्श जीवन जीने का प्रतीक है।

18. किसी भी कार्य को पूरा करने में सहयोगियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। साक्षात्कार के आधार पर बताइए कि लता जी के अपने सहयोगियों के साथ संबंध कैसे थे?

उत्तर : लता मंगेशकर के अपने सहयोगियों के साथ संबंध बहुत ही आत्मीय, सम्मानपूर्ण और सहयोगात्मक थे। उन्होंने बताया कि कोरस में गाने वाली लड़कियाँ उनके लिए परिवार जैसी थीं। वे सभी उनके घर आती-जाती थीं और वे भी उनके साथ जमीन पर बैठकर सहज रूप से बातें करती थीं। इससे उनके सरल और मिलनसार स्वभाव का पता चलता है। संगीतकारों और अन्य कलाकारों के साथ भी उनका व्यवहार अत्यंत आदरपूर्ण था। वे अपने सीनियर संगीतकारों के घर त्योहारों पर मिठाई लेकर जाती थीं, जिससे उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता झलकती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

वे सभी के साथ मिलकर काम करती थीं और किसी प्रकार का अहंकार नहीं रखती थीं। इस प्रकार, उनके संबंध केवल पेशेवर नहीं, बल्कि भावनात्मक और पारिवारिक भी थे, जो सहयोग की भावना को दर्शाते हैं।

19. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।"

उत्तर : आत्मविश्वास, स्वाभिमान, स्पष्टता
तर्क: यह पंक्ति उनके दृढ़ व्यक्तित्व को दिखाती है। सही बात पर डटे रहना और दूसरों के दबाव में न आना, उनके आत्मविश्वास और स्वाभिमान को प्रकट करता है।

20. लता मंगेशकर ने संगीत के विषय में क्या कहा?

उत्तर : लता मंगेशकर ने संगीत के विषय में कहा कि उसमें असीम शक्ति और अप्रत्याशित प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता होती है। उनके अनुसार संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक ऐसी कला है जो मन और आत्मा को गहराई से प्रभावित करती है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि जब कोई कलाकार पूरी तन्मयता और शुद्ध सुर में संगीत प्रस्तुत करता है, तो उससे अद्भुत प्रभाव उत्पन्न हो सकता है। उन्होंने उस्ताद अली अकबर ख़ाँ के सरोद का तार टूटने की घटना का उल्लेख करते हुए यह समझाया कि गहरे सुर की तीव्रता भी असाधारण परिणाम ला सकती है। इस प्रकार, लता जी मानती हैं कि संगीत में ऐसी अद्भुत और अनंत शक्ति होती है, जो सामान्य अनुभव से परे जाकर चमत्कारिक प्रभाव पैदा कर सकती है।

21. लता मंगेशकर ने संगीत की क्या विशेषताएँ बताई हैं?

उत्तर : लता मंगेशकर ने संगीत की कई महत्वपूर्ण विशेषताएँ बताई हैं। उनके अनुसार संगीत में असीम (अनंत) शक्ति होती है, जो मन और भावनाओं को गहराई से प्रभावित करती है। उन्होंने कहा कि संगीत में अप्रत्याशित प्रभाव उत्पन्न करने की क्षमता होती है, यानी यह कभी-कभी ऐसे परिणाम दे सकता है जो सामान्य अनुभव से परे हों।
संगीत आत्मा को छूने वाली कला है, जो श्रोता को भाव-विभोर कर सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि जब कोई कलाकार पूरी तन्मयता और शुद्ध सुर में गाता या बजाता है, तो उसका प्रभाव अत्यंत गहरा होता है। इस प्रकार, संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली और प्रभावशाली माध्यम है।

22. लता मंगेशकर ने संगीत की क्षमता का आकलन करते हुए क्या कहा?

उत्तर : लता मंगेशकर ने संगीत की क्षमता का आकलन करते हुए कहा कि इसमें असीम शक्ति और अप्रत्याशित रचने की क्षमता होती है। उनके अनुसार संगीत केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की भावनाओं और आत्मा को गहराई से प्रभावित करता है।
उन्होंने यह भी माना कि कभी-कभी संगीत इतना प्रभावशाली हो जाता है कि वह असाधारण अनुभव उत्पन्न कर सकता है। हालाँकि तानसेन जैसी कथाओं को वे निश्चित रूप से सिद्ध नहीं मानतीं, फिर भी उनका विश्वास है कि सच्चे सुर और पूर्ण तन्मयता से किया गया संगीत कुछ अनोखा और चमत्कारी प्रभाव जरूर पैदा कर सकता है। इस प्रकार, उन्होंने संगीत को एक शक्तिशाली और अद्भुत कला के रूप में स्वीकार किया है।

23. उस्ताद अली अकबर खाँ और पंडित रविशंकर के कंसर्ट में हुई घटना से संगीत के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर : लता मंगेशकर के अनुसार उस्ताद अली अकबर ख़ाँ और पंडित रवि शंकर के कंसर्ट में हुई घटना से यह पता चलता है कि संगीत में अद्भुत और गहरी शक्ति होती है। कंसर्ट के दौरान जब अली अकबर ख़ाँ पूरी तन्मयता से सरोद बजा रहे थे, तब अचानक उनका तार टूट गया। इस पर उन्होंने कहा कि "जब बहुत सुर में तार लगता है, तो टूट जाता है।"
इस घटना से स्पष्ट होता है कि जब संगीत पूरी शुद्धता, भावना और समर्पण के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो उसका प्रभाव अत्यंत तीव्र और असाधारण हो सकता है। यह संगीत की गहराई, उसकी शक्ति और कलाकार की साधना को दर्शाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

आपने देखा कि अनेक प्रश्नों का एक ही उत्तर हो सकता है और एक ही उत्तर से अनेक प्रश्न बनाए जा सकते हैं। अब नीचे दिए गए उत्तरों से अधिक से अधिक प्रश्न बनाइए (कम से कम दो)-

24. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।" क्या आप किसी ऐसी स्थिति से गुजरे हैं जब आपको किसी सही बात पर अकेले खड़ा होना पड़ा हो? कब और क्यों?

उत्तर : हाँ, ऐसी स्थिति कई लोगों के जीवन में आती है जब सही बात के लिए अकेले खड़ा होना पड़ता है। मेरे अनुभव के अनुसार, एक बार कक्षा में कुछ छात्र परीक्षा के दौरान नकल करने की योजना बना रहे थे। उन्होंने मुझे भी साथ देने के लिए कहा, लेकिन मुझे यह गलत लगा। मैंने साफ मना कर दिया और ईमानदारी से परीक्षा देने का निर्णय लिया। उस समय कुछ साथियों ने मेरा मज़ाक भी उड़ाया और मुझे अलग महसूस हुआ, लेकिन मैंने अपने निर्णय पर कायम रहना उचित समझा।

बाद में जब परिणाम आया, तो मुझे अपनी मेहनत का फल मिला और आत्मसंतोष भी हुआ। इस अनुभव से यह समझ में आया कि सही बात पर डटे रहना आसान नहीं होता, लेकिन अंत में वही सबसे सही और सम्मानजनक रास्ता होता है।

25. "बाबा ने जैसा सिखाया था, उस पर हम सभी भाई-बहनों ने चलने का प्रयास किया।" आपके परिवार में भी कोई ऐसी सीख या नियम अवश्य होंगे जिनका पालन आप किसी के याद दिलाए बिना स्वतः करते होंगे। उनके विषय में बताइए।

उत्तर : मेरे परिवार में भी कुछ ऐसी सीखें हैं, जिनका पालन मैं बिना किसी के कहे स्वयं करता हूँ। सबसे महत्वपूर्ण सीख है बड़ों का सम्मान करना और उनसे विनम्रता से बात करना। घर में यह नियम है कि कोई भी निर्णय हो, पहले सबकी राय सुनी जाए।

इसके अलावा हमें ईमानदारी और मेहनत का महत्व बचपन से सिखाया गया है, इसलिए मैं अपने काम खुद करने और सच बोलने की कोशिश करता हूँ। एक और आदत है समय का पालन करना, जैसे पढ़ाई और अन्य कार्य समय पर पूरा करना।

ये सारी बातें धीरे-धीरे आदत बन गई हैं, इसलिए अब इन्हें निभाने के लिए किसी के याद दिलाने की जरूरत नहीं पड़ती। मुझे लगता है कि ऐसी सीखें व्यक्ति के अच्छे चरित्र के निर्माण में बहुत मदद करती हैं।

26. "पहले दिन गुड़ि बाँधने के बाद नौ दिन तक उत्सव मनाया जाता है।" आप भी अपने घर में किसी पारंपरिक पर्व को विशेष तरीके से मनाते होंगे। उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर : हमारे घर में दीवाली का पर्व बहुत विशेष तरीके से मनाया जाता है। इस दिन सुबह से ही घर की साफ-सफाई और सजावट शुरू हो जाती है। शाम को सभी लोग मिलकर घर में दीपक जलाते हैं और रंगोली बनाते हैं। इसके बाद पूरे परिवार के साथ लक्ष्मी-गणेश की पूजा की जाती है, जिसमें सभी सदस्य शामिल होते हैं।

पूजा के बाद हम एक-दूसरे को मिठाई खिलाते हैं और आशीर्वाद लेते हैं। बच्चे पटाखे भी जलाते हैं, हालांकि अब हम कम पटाखे चलाने की कोशिश करते हैं ताकि पर्यावरण को नुकसान न हो। इस दिन घर में खुशी, उत्साह और आपसी प्रेम का माहौल होता है।

इस प्रकार, यह पर्व केवल उत्सव ही नहीं, बल्कि परिवार को एक साथ जोड़ने और परंपराओं को निभाने का भी अवसर होता है।

27. "बिल्कुल ठेठ गँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है, मगर आहिस्ता-आहिस्ता वह भी अब खत्म हो रहा है।" पाठ में आपने पढ़ा कि लता मंगेशकर के बचपन से अब तक उत्सवों से जुड़ी अनेक परंपराएँ बदल रही हैं। कौन-कौन सी परंपराएँ बदल गई हैं? अपने घर-परिवार में बातचीत करके पता लगाइए कि विभिन्न त्योहारों को मनाने के तरीकों में कौन-कौन से बदलाव आ रहे हैं?

उत्तर : समय के साथ त्योहारों को मनाने के तरीके काफी बदल गए हैं। लता मंगेशकर के बचपन में जैसे मंगलागौर में स्त्रियाँ इकट्ठा होकर पारंपरिक गीत गाती थीं, नृत्य करती थीं और पूरे उत्सव में सादगी व अपनापन होता था, वैसी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in

परंपराएँ अब धीरे-धीरे कम होती जा रही हैं। पहले त्योहारों में सामूहिकता, लोकगीत, घर का बना भोजन और धार्मिक विधियों का महत्व अधिक था।

आजकल मेरे घर-परिवार में भी कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं—अब लोग समय की कमी के कारण सरल तरीके से पूजा करते हैं, बाजार से बनी मिठाइयाँ लाते हैं और पारंपरिक गीतों की जगह मोबाइल या टीवी का सहारा लेते हैं। पहले की तरह सबका एक साथ बैठकर लंबे समय तक उत्सव मनाना कम हो गया है।

इस प्रकार, त्योहार आज भी मनाए जाते हैं, लेकिन उनमें सादगी और सामूहिकता की जगह आधुनिकता और सुविधा अधिक दिखाई देती है।

----- -----

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE studentbro.in